Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APMA–303

M.A. (Pevious) Examination, 2023

HINDI

Paper - III

(प्राचीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति पर प्रकाश डालिए।

   (ii) 'पद्मावती समय' की **दो** विशेषताएँ बताइए।

   (iii) बीसलदेव रासो में मुख्यत: किसका वर्णन है ?

(iv) 'बीसलदेव रासो' में खण्ड विभाजन और छन्द संख्या के बारे में बताइए।

(v) विद्यापति के काव्य में प्रयुक्त भाषा का परिचय दीजिए।

(vi) विद्यापति के काव्य में प्रकृति चित्रण विषय पर प्रकाश डालिए।

(vii) कबीर की साखियों में 'गुरुदेव को अंग' का महत्व बताइए।

(viii) कबीर के राम की क्या विशेषता है ?

(ix) जायसी के राघवचेतन प्रसंग का परिचय दीजिए।

(x) सूफी शब्द का अर्थ बताइए।

खण्ड–ब

2. कुटिल केस सुदेश, पौहप रचियत पिक्क सद।

कमल–गन्ध, वय–संध, हंस गति चलत मन्द मंद॥

सेत वस्त्र सोहै सरीर, नष स्वाति बुन्द जस।

भ्रमर भवहि भुल्लहिं सुभाव मकरन्द बास रस॥

नयन निरिष सुष पाय सुक, यह सुदिन मुरति रचिय।

उमा प्रसाद हर हेरिगत मिलहि राज प्रथिराज जिय॥

3. गज–गमणी मृग–लोचानी नारि,

सीस संभरई दिन गणै

सायधण ऊभी राज–दुवारि

नाह न देसै चिहुं दिसा,

जिय काय हो ओळगाण की नारि

जाय दिहाड़े झूरतां॥

4. नन्दक नन्दक कदम्बक तरु–तर, धिरे–धिरे मुरली बजाव।

समय सँकेत निकेतन बइसल, बेरि–बेरि बोलि पठाव।

सामरि तोरा लागि, अनुखन विकल मुरारि।

जमुना कै तिर उपवन उदबेगल, फिर-फिर ततहि निहारि।

गोरस बेचए अबदूत-जाइत जनि-जनि पूछ बनमारि।

तोहे मति मान सुमति मधुसूदन, बचन सुनह किछ मोरा।

भनई विद्यापति सुनु बर जौबति बन्दह नन्द किसोरा।

5. सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।

लोचन अनँत उघाड़ियाा, अनँत दिखावण हार॥

सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जू बाइया एक।

लागत ही भुइँ मिल गया, पड़या कलैजे छेक॥

हंसे न बोलै उनमनीं, चंचल मेल्ह्या मारि।

कहै कबीर भीतरि भिंद्या, सतगुर के हथियार।

6. पंडित बाद बदंते झूठा।

राम कह्याँ दुनिया गति पावै, षाडे कह्यां मुख मीठा॥

पावक कह्याँ पावं जे दासै, जल कहि तृषा बुझाई।

भोजन कह्याँ भूष जे भाजै, तो सब कोई तिरि जाई॥

नर के साथ सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै।

जो कबहूँ उड़ि जाइ जँगल मैं, बहुरि न सुरतैं आनै॥

साची प्रीति विषै माया सूँ, हरि भगतन सूं हांसी।

कहै कबीर प्रेम नहीं उपज्यो, बांध्यौ जमपुर जासी॥

7. पैग-पैग पर कुआँ बावरी। ताजी बैठक और पाँवरी॥

ओरु कुंड बहु ठावहि ठाऊँ, औ सब तीरथ तिन्ह कै नाऊं॥

मठ मंडप चहु पास सवारे, तपा जपा सब आसन मारे॥

कोई सु ऋषीसुर, कोई संन्यासी, कोई रामयती बिसवासी॥

कोई ब्रह्मचार पथ लागे। कोई सो दिगम्बर विचरहि नाँगे॥

कोई सु महेसर जंगम जती। कोई एक परखे देवी सती॥

कोई सुरसती कोई जोगी। कोई निरास पथ बैठ वियोगी॥

सेवरा खेवरा बानपर, सिध-साधक अवधूत।

आसन मारे बैठ सब, आरि आतमा भूत॥

8. नागमति चितउर-पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कन्ह न फेरा॥

नागर काहु नारि बस परा। तेइ मोर पिउ मोसौं हेरा॥

सुआ काल होई लेइगा पीऊ। पिऊ नहिं जात-जात बरु जोऊ॥

भयउ नरायन बावन करा। राज करत राजा बलि छरा॥

करन पास लीन्हेउ के छंदू। विप्र रूप धरि झिलमिल इदूं॥

मानत भोग गोपिचन्द भोगी। लेइ अपसबा जलंधर जोगी॥

लेइगा कृस्नहि गरूड़ अलोपी। कठिन बिछोह, जियहिं किमि गोपी॥

सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह ?

झुरि-झुरि पंजर हौ भई, विरह काल मोहि दीन्ह॥

खण्ड–स

9. भाव और कला पक्ष की दृष्टि से 'पदमावती समय' का मूल्यांकन कीजिए। 10+10=20

10. गीति काव्य के तत्वों के आधार पर विद्यापति के काव्य की विवेचना कीजिए। 20

11. ''रहस्यवादी कवियों में कबीर का आसन सबसे ऊँचा है। शुद्ध रहस्यवाद केवल उन्हीं का है।'' इस कथन की विवेचना करते हुए कबीर के रहस्यवाद की जायसी के रहस्यवाद से तुलना कीजिए। 14+6=20

12. रासो काव्य की प्रामाणिकता को प्रकाशित कीजिए एवं रासो काव्य परम्परा में बीसलदेव रासो का स्थान निर्धारण कीजिए। 7+13=20